श्रीरामचरितमानस की भाषा का भाषावैज्ञानिक अध्ययन

डॉ. आलोक कुमार सिंह

सारांश

श्रीरामचरितमानस एक महाकाव्य है जो सन् 1574 ई. में संत तुलसीदास द्वारा लिखा गया था। यह काव्य मुख्य रूप से अवधी भाषा में लिखा गया है, जो कि उत्तर भारत में बोली जाने वाली एक प्रमुख भाषा है। श्रीरामचरितमानस की भाषा का विशेष महत्व है। इसमें सरलता और अभिव्यक्ति की अद्वितीयता है। तुलसीदास ने इस काव्य को आम लोगों तक पहुंचाने के लिए सरल, सुगम और संवेदनशील भाषा का प्रयोग किया है। भाषा में सुधा, गीति, छंद, और भावों का सम्मिलन है, जो इसे एक अत्यन्त प्रभावशाली और साहित्यिक अनुभव बनाता है। इस काव्य में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है। तुलसीदास ने साहित्यिक समृद्धि के लिए भाषा के विविधता का सशक्त उपयोग किया है। श्रीरामचरितमानस में भाषा की सादगी, व्यावसायिकता, और उत्तम व्याकरणिक गुणधर्मों का ध्यान देने से यह एक महत्वपूर्ण साहित्यिक और भाषाई कीर्ति हासिल करता है। श्रीरामचरितमानस की भाषा ने व्यावसायिकता के साथ ही रस, भावना और धार्मिकता को भी सुंदरता से प्रकट किया है। इस ग्रंथ का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन करने से न केवल भाषा की विविधता और उसकी सौंदर्यता का पता चलता है, बल्कि उस समय के सांस्कृतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य को भी समझा जा सकता है। इस महाकाव्य की भाषा, जो अवधी है उस पर भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना अत्यंत रोचक है। अवधी की विशेषताएं, तुलसीदास के भाषा प्रयोग, और उनके द्वारा निर्मित शैली इस ग्रंथ को विशिष्ट बनाते हैं। यह ग्रंथ भाषावैज्ञानिक अध्ययन के लिए भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इसमें भाषा का उपयोग, शैली, व्याकरण, शब्दावली और वाक्य निर्माण के कई पहलू हैं। यह ग्रंथ उस समय की सांस्कृतिक, सामाजिक, और धार्मिक परिप्रेक्ष्य को प्रतिबिम्बित करता है और हिन्दी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मुख्य शब्द : श्रीरामचरितमानस, भाषावैज्ञानिक, भाषा प्रयोग, शब्द, अवधी, ग्रंथ।

श्रीरामचरितमानस की भाषा का अध्ययन हमें भाषा के उपयोग, व्याकरण, शैली, शब्द संग्रह और संदर्भों के साथ गहराई से समझने का अवसर प्रदान करता है। श्रीरामचरितमानस की भाषा का अध्ययन करते समय हमें इसमें उपयोग किए गए व्याकरणीय सिद्धांतों, वाक्य-रचना के प्रकार और शब्दावली के प्रमुख शब्दों का अध्ययन करने का मौका मिलता है। तुलसीदास ने अपनी रचना में अनेक भाषाई और साहित्यिक युक्तियों का उपयोग किया है, जिससे इसका भाषावैज्ञानिक अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है। यह ग्रंथ अन्य ग्रंथों की भांति केवल धार्मिक और सामाजिक पहलुओं का ही विश्लेषण नहीं करता, बल्कि भाषा और साहित्य के क्षेत्र में भी अद्वितीय महत्व रखता है।

श्रीरामचरितमानस में भाषा का प्रयोग बहुत ही समृद्ध और उत्तम ढंग से किया गया है। इस ग्रंथ में प्रयुक्त भाषा की विशेषताएँ, व्याकरण के नियम, वाक्य रचना और समास के प्रकारों का अध्ययन किया जा सकता है।

तुलसीदास ने अपनी रचना में विविधता, व्याकरण की नियमितता और सुन्दर भाषा का प्रयोग किया है। भाषा के प्रयोग की विविधता को देखते हुए हम उन्हें विभिन्न वर्गों और पात्रों की भाषा के माध्यम से समझ सकते हैं। इस ग्रंथ में राजा, योगी, संत और साधुओं की भाषा और व्यवहार का विवरण है जो इसे एक अद्वितीय भाषाई अध्ययन का विषय बनाता है। इसके अतिरिक्त ग्रंथ में उपयुक्त शब्दों का विशेष अध्ययन करके हम उनके अर्थ और प्रयोग को समझ सकते हैं। तुलसीदास ने अपनी रचना में उच्च काव्य स्तर के शब्द संग्रह का प्रयोग किया है। श्रीरामचरितमानस की भाषा के भाषावैज्ञानिक अध्ययन से हमें ग्रंथ के साहित्यिक महत्व को समझने में सहायता मिलती है। इस अध्ययन से हम ग्रंथ की भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताओं को समझ सकते हैं और हमें भाषा और साहित्य के क्षेत्र में विस्तार से विचार करने की प्रेरणा मिलती है।

श्रीरामचरितमानस की भाषा का भाषावैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए हमें विषय को संक्षेप में समझना और मुख्य बिंदुओं को उभारना होगा जिसके लिए हम निम्नलिखित विषयों का समावेश कर सकते हैं- श्रीरामचरितमानस में प्रयुक्त भाषा की विशेषताएँ, व्याकरण के नियम, वाक्य रचना और समास के प्रकारों का अध्ययन। ग्रंथ में भाषा का प्रयोग किस प्रकार से किया गया है, इसका विवेचन, उदाहरण के रूप में, व्यंग्य, अलंकार और अन्य साहित्यिक उपकरणों का उपयोग कैसे किया गया है। ग्रंथ में प्रयुक्त शब्दों का विशेष अध्ययन, उनके अर्थ और प्रयोग का विश्लेषण। भाषा की समृद्धता और विविधता के प्रकारों का अध्ययन। भाषा के उपयोग को धार्मिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से देखें जैसे धर्म, आध्यात्मिकता और सामाजिक मूल्यों का प्रतिबिम्ब कैसे दिखाया गया है। श्रीरामचरितमानस में व्याकरण के नियमों का पालन कैसे किया गया है। अद्वितीय शब्द संग्रह का अध्ययन करना और उनका अर्थ और प्रयोग विश्लेषण करना। इन सभी पहलुओं का विस्तृत अध्ययन कर, हम श्रीरामचरितमानस की भाषा के भाषावैज्ञानिक पहलुओं को समझ सकते हैं और उसका महत्वपूर्ण योगदान भी देख सकते हैं।

श्रीरामचरितमानस में विविधता और विशेषता के साथ भाषा का प्रयोग किया गया है। वात्सल्य, भक्ति और दृढ़ संवेदनशीलता के साथ भावनाओं का वर्णन किया गया है। इसका अध्ययन कर हम भावनाओं के प्रकार और उनके व्यक्तिगत अनुभवों को समझ सकते हैं। तुलसीदास जी ने व्याकरण के नियमों का ध्यान रखा है, जिससे भाषा का प्रयोग सही और सुगम होता है। वाक्य निर्माण, संज्ञाओं का प्रयोग, संधि और विराम चिन्हों का प्रयोग उनके लेखन में महत्वपूर्ण है। श्रीरामचरितमानस में विभिन्न वर्गों के लोगों की भाषा और व्यवहार का विवरण किया गया है। इसमें राजा, योगी, संत और साधुओं की भाषा और व्यवहार का अद्वितीय अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। तुलसीदास ने अपनी रचना में उच्च काव्य स्तर के शब्द संग्रह का प्रयोग किया है। इसका अध्ययन करके हम उनके शब्द संग्रह की उत्तमता और उनके प्रयोग के प्रकार को समझ सकते हैं। श्रीरामचरितमानस में उपयुक्त भाषा का प्रयोग इस प्रकार किया गया है कि यह साहित्यिक महत्व को बनाए रखते हुए भी साधारण जनता को समझने में आसान हो। इस ग्रंथ के भाषावैज्ञानिक अध्ययन में हमें इन सभी पहलुओं का ध्यान देना चाहिए ताकि हम इस ग्रंथ की भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताओं को समझ सकें।

भाषा की संरचना

श्रीरामचरितमानस में प्रयुक्त भाषा अवधी है, जो हिंदी की एक उपभाषा है। अवधी भाषा की अपनी विशेषताएँ हैं, जो इसे हिंदी से अलग बनाती हैं। तुलसीदास ने इस भाषा का प्रयोग कर एक ओर जहाँ ग्रामीण और शहरी जीवन को जोड़ा है, वहीं दूसरी ओर इसे सरल और ग्राह्य बनाया है।

अवधी भाषा की विशेषताएँ

ध्वन्यात्मकता

अवधी भाषा की ध्वन्यात्मक विशेषताएँ इसे सजीव और प्रभावशाली बनाती हैं। इसमें विशेषतः स्वर और व्यंजन ध्वनियाँ मिलकर एक संगीतात्मक धारा उत्पन्न करती हैं।

शब्द निर्माण

अवधी में शब्द निर्माण की प्रक्रिया हिंदी से थोड़ी भिन्न है। इसमें तत्सम और तद्भव शब्दों का समायोजन देखा जाता है।

वाक्य संरचना

अवधी में वाक्य संरचना सरल और प्रवाहमयी है, जिससे पाठक और श्रोता दोनों को समझने में आसानी होती है।

श्रीरामचरितमानस में भाषा का प्रयोग

काव्य की भाषा

तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में अवधी भाषा का प्रयोग अत्यंत कुशलता से किया है। उनके द्वारा प्रयुक्त शैली सरल, प्रभावी और सजीव है। तुलसीदास ने अवधी की लोकप्रियता और उसकी संप्रेषणीयता का पूरा लाभ उठाया।

अलंकार और छंद

श्रीरामचरितमानस में अलंकारों का प्रयोग व्यापक रूप से हुआ है, जैसे कि अनुप्रास, उपमा, रूपक आदि। छंदों में दोहा, चौपाई, सोरठा, और कुंडलिया प्रमुख हैं। इन छंदों का प्रयोग करके तुलसीदास ने काव्य को संगीतमय और प्रभावशाली बनाया है।

सांस्कृतिक संदर्भ

तुलसीदास ने अवधी के माध्यम से रामायण की कथा को जन-जन तक पहुँचाया। उनके द्वारा प्रयुक्त लोकगीत, कहावतें और सांस्कृतिक संदर्भ इस महाकाव्य को जीवन्त बनाते हैं। इसमें समाज की रूढ़ियों, धार्मिक आस्थाओं और सांस्कृतिक परंपराओं का सुंदर चित्रण है।

तुलसीदास का भाषा कौशल

संवाद की सजीवता

तुलसीदास ने संवादों को अत्यंत सजीव और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। पात्रों के संवाद उनकी मनोदशा और स्थिति को प्रकट करते हैं। तुलसीदास के संवादों में सहजता और स्वाभाविकता है, जो पाठक को कथानक में डूबने को मजबूर कर देती है।

भावाभिव्यक्ति

तुलसीदास की भावाभिव्यक्ति अद्वितीय है। उन्होंने भक्ति, प्रेम, करुणा और वीरता जैसे भावों को उत्कृष्टता से अभिव्यक्त किया है। उनके शब्द चयन और वाक्य विन्यास इस काव्य को अद्वितीय बनाते हैं।

धर्म और दर्शन

श्रीरामचरितमानस में धर्म और दर्शन का भी विशिष्ट स्थान है। तुलसीदास ने अवधी भाषा में वेदांत, भक्ति और राम भक्ति का समन्वय किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत धार्मिक और दार्शनिक विचार सरल और बोधगम्य है।

अवधी की भाषा वैज्ञानिक विशेषताएं

ऐतिहासिक विकास

अवधी भाषा हिंदी की एक प्रमुख बोली है, जो मुख्यतः उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में बोली जाती है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है, जो प्राचीन भारतीय भाषाओं का एक रूप है। अवधी की जड़ें संस्कृत में हैं, और इसके विकास में प्राकृत और अपभ्रंश का महत्वपूर्ण योगदान है।

ध्वन्यात्मकता

अवधी की ध्वन्यात्मक विशेषताएं इसे अन्य हिंदी बोलियों से अलग बनाती हैं। इसमें स्वर संधि, व्यंजन संधि और अनुनासिक ध्वनियों का प्रयोग प्रमुख है। जैसे कि "राम" को "रामा" और "हनुमान" को "हनुमाना" कहा जाता है।

शब्द रचना

अवधी में शब्द रचना की प्रक्रिया भी विशेष है। संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग सामान्य है। इसके अतिरिक्त, देशज और विदेशी शब्दों का भी समावेश होता है, जो भाषा को और भी समृद्ध बनाता है।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण

शब्दावली का विश्लेषण

तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में संस्कृत, प्राकृत, और देशज शब्दों का मिश्रण किया है। यह मिश्रण भाषा को समृद्ध और विविध बनाता है। तुलसीदास ने विभिन्न क्षेत्रों और वर्गों के शब्दों का प्रयोग कर भाषा को व्यापकता प्रदान की है।

ध्वनि संरचना

श्रीरामचरितमानस की ध्वनि संरचना मधुर और संगीतात्मक है। तुलसीदास ने स्वर और व्यंजनों का संतुलित प्रयोग किया है। उनके छंदों की लय और तालबद्धता पाठकों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

व्याकरणिक संरचना

तुलसीदास ने अवधी व्याकरण के नियमों का पालन करते हुए भाषा का प्रयोग किया है। उनके वाक्य संरचना, संज्ञा-विशेषण प्रयोग और क्रिया रूप अवधी भाषा की विशेषताओं को प्रकट करते हैं। अवधी की

व्याकरणिक संरचना में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण और अव्यय का विशेष महत्त्व है। इसके व्याकरणिक नियम हिंदी से थोड़े भिन्न होते हैं, जैसे कि क्रिया रूपों में बदलाव और वाक्य संरचना की विशेषताएं।

ध्वन्यात्मक अध्ययन

ध्वन्यात्मक दृष्टिकोण से श्रीरामचरितमानस की भाषा बहुत ही समृद्ध है। ध्वन्यात्मकता में स्वरों और व्यंजनों की विभिन्नता देखी जा सकती है।

स्वर ध्वनियाँ

1. अवधी में हिंदी की तरह दीर्घ और ह्रस्व स्वर पाए जाते हैं।

2. स्वर संधि का प्रयोग व्यापक रूप से किया गया है, जो ध्वनि मेल को सुगम और मधुर बनाता है।

व्यंजन ध्वनियाँ

1. अवधी में हिंदी के समान ही व्यंजनों का प्रयोग किया जाता है, परंतु कुछ ध्वनियाँ जैसे 'ळ' का अधिक उपयोग मिलता है।

2. व्यंजन संधि की विधियाँ भी देखी जाती हैं, जो वाक्य को संक्षिप्त और स्पष्ट बनाती हैं।

शब्दार्थ और अर्थविज्ञान

शब्दार्थ और अर्थविज्ञान के दृष्टिकोण से श्रीरामचरितमानस में प्रयुक्त शब्दों का चयन बहुत ही विचारपूर्ण है। शब्दार्थ विज्ञान में निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान दिया गया हैः

तत्सम और तद्भव शब्द

1. तत्सम शब्द संस्कृत से सीधे लिए गए हैं, जो ग्रंथ की पवित्रता और गरिमा को बढ़ाते हैं।

2. तद्भव शब्द अवधी और लोकभाषा से लिए गए हैं, जो कथा को सजीव और सहज बनाते हैं।

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

1. ग्रंथ में प्रचुर मात्रा में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है, जो पाठक को कथानक के साथ जोड़ते हैं।

2. इनका प्रयोग कथा की गहराई और भावनात्मक प्रभाव को बढ़ाता है।

व्याकरणिक अध्ययन

व्याकरणिक दृष्टिकोण से अवधी भाषा का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। तुलसीदास ने अपने ग्रंथ में व्याकरण के नियमों का पालन करते हुए भी कई स्थानों पर रचनात्मक स्वतंत्रता ली है।

संज्ञा और सर्वनाम

1. संज्ञाओं का प्रयोग बहुत ही संतुलित रूप से किया गया है, जिससे पात्रों और स्थानों का स्पष्ट वर्णन हो सके।
2. सर्वनामों का प्रयोग पात्रों की निकटता और भावनात्मक संबंध को दर्शाता है।

क्रिया

1. क्रियाओं का चयन और उनका प्रयोग कथा की गतिशीलता को बनाए रखने में सहायक है।

2. विशेष क्रिया रूपों का प्रयोग कर पात्रों की मनःस्थिति और क्रियाकलापों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

विशेषण और क्रिया विशेषण

1. विशेषणों का प्रयोग पात्रों और घटनाओं का विशद वर्णन करता है।
2. क्रिया विशेषणों का प्रयोग कथा की गति और दिशा को नियंत्रित करने में सहायक होता है।

शैलीगत अध्ययन

श्रीरामचरितमानस की शैली उसकी सबसे बड़ी विशेषता है। तुलसीदास ने अवधी भाषा में सरल, प्रवाहमयी और मधुर शैली का प्रयोग किया है, जो पाठक को कथा से जोड़ती है।

काव्य शैली

1. दोहा, चौपाई और सोरठा का प्रयोग ग्रंथ की कविता को संगीतात्मक और लयबद्ध बनाते हैं।
2. अनुप्रास, रूपक, उपमा जैसे अलंकारों का प्रयोग काव्य की शोभा बढ़ाता है।

प्रसंग और संवाद

1. प्रसंगों का चयन और उनका क्रम कथा की प्रवाह को बनाए रखता है।
2. संवादों का प्रयोग पात्रों की भावनाओं और विचारों को प्रकट करने में सहायक है।

सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ

भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं होती, बल्कि यह संस्कृति और समाज का प्रतिबिंब भी होती है। श्रीरामचरितमानस में तुलसीदास ने अवधी भाषा का प्रयोग कर उस समय की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों को उजागर किया है।

सामाजिक संदर्भ 1. तत्कालीन समाज की परंपराओं, रीतियों और विश्वासों का वर्णन अवधी भाषा के माध्यम से किया गया है।

2. समाज के विभिन्न वर्गों और उनके आपसी संबंधों को भी भाषा के माध्यम से चित्रित किया गया है।

सांस्कृतिक संदर्भ

1. धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से ग्रंथ में अवधी भाषा का प्रयोग पाठक को भक्ति भाव में डूबो देता है।
2. लोकगीतों, लोककथाओं और धार्मिक गाथाओं का समावेश ग्रंथ की सांस्कृतिक धरोहर को प्रकट करता है।

श्रीरामचरितमानस को भाषाई दृष्टिकोण से अध्ययन करते समय, इसके कई महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्यों को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण हैः

सामाजिक परिप्रेक्ष्य

श्रीरामचरितमानस को लिखने का मुख्य उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन और धार्मिक जागरुकता को बढ़ावा देना था। इसके माध्यम से समाज को धार्मिक उत्थान, शिक्षा और नैतिकता की ओर प्रेरित किया गया।

साहित्यिक परिप्रेक्ष्य

तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में साहित्यिक गुणधर्मों को सम्मिलन किया है। इसमें रस, छंद, गीति और भाव का विशेष महत्व है, जो इसे एक उत्कृष्ट काव्य बनाता है।

भाषाई परिप्रेक्ष्य

इस काव्य में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। तुलसीदास ने सरल और सुलभ भाषा का प्रयोग किया है, जो सामान्य लोगों को भी समझने में सहायक होता है।

धार्मिक परिप्रेक्ष्य

श्रीरामचरितमानस धार्मिक भावनाओं, धर्म के महत्व और भगवान राम की लीलाओं को प्रस्तुत करता है। इसका भाषाई दृष्टिकोण भी धार्मिकता को समझने में मदद करता है।

साहित्यिक योगदान

श्रीरामचरितमानस की भाषा और साहित्यिक गुणधर्म ने उत्तर भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान किया है। इसके माध्यम से धार्मिक और सामाजिक संदेश को लोगों तक पहुंचाने में सफलता हुई है।

इन सभी परिप्रेक्ष्यों के माध्यम से हम श्रीरामचरितमानस की भाषा को उसके सम्पूर्ण साहित्यिक, सामाजिक और धार्मिक संदेश के साथ समझ सकते हैं। श्रीरामचरितमानस की भाषा को भाषाई दृष्टिकोण से अध्ययन करने पर कई महत्वपूर्ण पहलुओं का पता चलता है।

भाषा की उपयोगिता

श्रीरामचरितमानस की भाषा उपयोगिता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। तुलसीदास ने इस काव्य को अवधी भाषा में लिखा, जो कि उत्तर भारत में बोली जाने वाली एक सामान्य भाषा थी। इससे इस काव्य का साधारण जनता तक पहुंचना संभव हुआ।

भाषा की सरलता

श्रीरामचरितमानस की भाषा बहुत ही सरल और सुलभ है। तुलसीदास ने सांस्कृतिक गतिविधियों, धार्मिक विषयों और रामायण कथा को सरलता से प्रस्तुत किया है, जिससे समान्य लोग भी इसे समझ सकें।

भाषा का साहित्यिक गुणधर्म

श्रीरामचरितमानस की भाषा में साहित्यिक गुणधर्म भी प्रमुख है। इसमें रस, छंद, गीति और भाव का सम्मिलन है जो इसे एक अद्वितीय और प्रभावशाली काव्य बनाता है।

भाषा का धार्मिकता से संबंध

श्रीरामचरितमानस में भाषा का धार्मिकता से गहरा संबंध है। तुलसीदास ने भाषा के माध्यम से भगवान राम की भक्ति, धर्म और नैतिकता को प्रस्तुत किया है। इन सभी पहलुओं से प्रकट होता है कि श्रीरामचरितमानस की भाषा का भाषाई दृष्टिकोण अत्यंत महत्वपूर्ण है और यह उपलब्धि और संदेश को संधारित करने में मदद करता है।

निष्कर्ष

श्रीरामचरितमानस में भाषा का प्रयोग व्यावहारिक और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य से किया गया है। हमें यहाँ विभिन्न पात्रों की भाषा, उनके व्यवहार और व्यक्तित्व के संदर्भ में विचार करने का मौका मिलता है। ग्रन्थ में व्याकरण के नियमों का पालन किया गया है। यहाँ उपयुक्त वाक्य रचना, संज्ञाओं का प्रयोग और विराम चिन्हों का सही उपयोग ध्यान में रखा गया है। तुलसीदास की भाषा शैली का अध्ययन करने से हमें उनकी लेखनी की विशेषताएँ और उनका साहित्यिक अभिव्यक्ति के प्रति दृष्टिकोण मिलता है। ग्रन्थ में प्रयुक्त शब्दों का अध्ययन करने से हमें उनके अर्थ, पर्यायवाची और विशेषताएँ समझने में सहायकता मिलती है। भाषाविज्ञान की दृष्टि से

हम ग्रन्थ के साहित्यिक महत्व को समझ सकते हैं। यहाँ हम ग्रन्थ के साहित्यिक परिप्रेक्ष्य से भाषा का अध्ययन करते हुए उसकी विशेषताओं को समझ सकते हैं। श्रीरामचरितमानस की भाषा का भाषावैज्ञानिक अध्ययन हमें इस ग्रन्थ की भाषा की विशेषताओं, व्याकरण, शैली, और संदर्भों को समझने में मदद करता है। इसके माध्यम से हम भाषा और साहित्य के क्षेत्र में विस्तार से विचार करने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं और भाषा के उपयोग के प्रति जागरुक होते हैं। श्रीरामचरितमानस का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन अवधी भाषा की समृद्धि और उसकी व्यावहारिकता को उजागर करता है। तुलसीदास ने इस ग्रंथ के माध्यम से न केवल एक धार्मिक कथा प्रस्तुत किया है, बल्कि अवधी भाषा की सौंदर्यता और उसकी विविधता को भी प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भाषा न केवल संप्रेषण का माध्यम है, बल्कि यह समाज और संस्कृति का एक अभिन्न अंग भी है। श्रीरामचरितमानस की भाषा का यह अध्ययन भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए मार्गदर्शक साबित हो सकता है। श्रीरामचरितमानस की भाषा का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन तुलसीदास के भाषा कौशल और अवधी की विशेषताओं को उजागर करता है। उन्होंने अवधी भाषा का प्रयोग कर रामायण की कथा को लोकप्रिय बनाया और हिंदी साहित्य में एक नया आयाम जोड़ा। उनका भाषा प्रयोग सजीव, सरल और संप्रेषणीय है, जो आज भी पाठकों को आकर्षित करता है। श्रीरामचरितमानस की भाषा में छिपी साहित्यिक और सांस्कृतिक धरोहर भारतीय साहित्य को समृद्ध करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अवस्थी, सद्गुरूशरण. तुलसी : व्यक्तित्व और विचार, विद्यामन्दिर, लखनऊ, संस्करण 1952
2. कुमार, राज तुलसी का गवेषणात्मक अध्ययन : सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा, संस्करण 2012
3. गणेश, लाला. श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदास जी का जीवन-चरित : गणेशीलाल लक्ष्मीनारायण, मुरादाबाद, संस्करण 1969
4. जैन, डॉ. विमल कुमार. तुलसीदास और उनका साहित्य : साहित्य सदन, देहरादून, संस्करण 1957

डॉ. आलोक कुमार सिंह
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग
माँ मंशा देवी महाविद्यालय, चंदौली